कब कौन अपनी कह सका

समझे पराए प्यार को
अवकाश कब संसार को
कब आँसुओं की धार में

कोई किसी की बह सका
कब कौन अपनी कह सका

वह कौन दुखिया आज है
पीड़ित समस्त समाज है
सौ में अगर दस हँस लिए

क्या विश्व हँसमुख रह सका
कब कौन अपनी कह सका

इस कुटिल काल प्रहार को
रूखे जगत व्यवहार को
फिर कब सहूँगा आज मानव

बन नहीं यदि सह सका
कब कौन अपनी कह सका

क्या अर्थ इस अनुराग का
मेरे ह्रदय की आग का
जिसके प्रबल विस्फोट से

जर्जर समाज न ढह सका
कब कौन अपनी कह सका।

-डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'